Vol 5 Issue 10 April 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldgrt.lbp.world

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 10 | April - 2016

Golden Research Thoughts

GRT

“पद्मावत महाकाव्य में विरह वर्णन”

रणनवरे शितल केशव
मु. सा. काकडे महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर, ता. बारामती, जि. पुणे.

प्रस्तावना : –

मालिक मुहम्मद जायसी भक्तिकाल के चार प्रमुख आधार स्तभों में से एक है। कबीर, तुलसी, सुरदास और जायसी इन चारों आधारों पर भक्तिकाल का सुंदर भवन शोभायमान है। कवि जायसी प्रेममार्गी शाखा के प्रवर्तक हैं। इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचने के लिए प्रेममार्ग को अपनाया। यह मार्ग दिखने में बडा सरल है परंतु उतना ही कठिन है। क्योंकि जायसी का कहना है कि प्रेम का सच्चा रूप विरह में ही निखरता है। इसलिए जायसी ने पद्मावत में विरह वर्णन को अत्याधिक महत्व दिया है। इसी उद्देश्य से मैंने इसी विषय को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

विषय विवेचन :–

जायसी प्रेम एवं वेदना के कवि थे। उनका ह्रदय प्रेम वेदना से भरा रहता था। वे प्रेम की पीर को अभिव्यक्त करने के लिए व्याकुल रहते थे। उनकी चित्तवृत्ति वियोग वर्णन में अधिक रमी है। उन्होंने अपने महाकाव्य ‘पद्मावत’ में स्थान स्थान पर विरह भावना का अंत्यंत मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। ऐसा जान पडता है कि मानों जायसी को नारी ह्रदय प्राप्त था। क्योंकि उनके काव्य में नारी सुलभ कोमलता एवं सुकुमारता काफी अभिव्यक्त हुई है।

‘पद्मावत’ में जायसी को रत्नसेन और पद्मावती के विरह वर्णन में जितनी सफलता मिली है, उससे कई अधिक उनकों नागमती के विरह विर्णन में मिली। नागमती के विरह वर्णन में जितनी आकुलता, मर्मिकता, प्रौढता, प्रांजलता, सजीवता, स्वाभाविकता एवं सुकुमारता दिखाई देती है। उतनी किसी भी महाकाव्य में नही मिलती है। इसलिए नागमती विरह वर्णन हिंदी साहित्य की अनुपम निधि मानी जाती है। और नागमती का विरह विश्व नारी का प्रतिनिधित्व करता है।

नागमती वियोग खंड के अंतर्गत वह प्रसिद्ध बारहमासा है, जिसमें वेदना की अत्यंत मर्मिक अभिवक्ति की गई है। उपर्युक्त विविचेन के आधार पर ‘पद्मावत’ के विरह वर्णन की विशेषताएँ निम्मानुसार है।

1.विरह वेदना की अतिशयता :–

‘पद्मावत’ में विरह का जो स्वरूप अंकित किया गया है। वह अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ है, क्योंकि नागमति की विरह वेदना का इतना यथार्थ और वास्तविक चित्रण हुआ है कि उसके विरह से प्रकृति तक प्रभावित हुई है। नागमती की विरह आग में जल रही है और उसी अग्नि के धुए के कारण भौरा और कौआ बन गया। वह भौरे असैर कौए को दूत बनाकर संदेश पहुँचाने के लिए कहती है,

“पिऊ सों कहेउ संदेसडा, है भौरा के काग,
सो धनि जरि सुई तेंहिक धुआ हम लाग।”

2. विरह वेदना की मार्मिकता :–

'पद्मावत' में केवल विरह ताप का ही वर्णन नहीं है बल्कि विरहीजनों की पीडा, ताप, कसक की भी मार्मिक अभिव्यक्ती है। नागमती का प्रेम विरह में अपने पति के प्रति दौर भी प्रगाढ हो जाता है। उसकी इतनी ही इच्छ है कि वह अपने शरीर को विरह ताप में जालकर भस्म कर देगी और पवन द्वारा उडकर राख के रूप में प्रिय आनेवाले पथ पर पडी रहेगी। जहॉं उसका प्रियतम अपने चरण रखेगा इस अभिलाषा का वर्णन करते हुए जायसी लिखते हैं –

''यह तन जारौं छार कै कहॉं कि पवन उडाव।
मकु तेहि मारग होई परौ कंत धरै जहॉं पांव ।।''

3. विरह वर्णन में सात्विकता :–

'पद्मावत' के विरह वर्णन सात्विकता का प्राधान्य है। विरह काल में नागमती के मन में भोग विलास की आकांक्षा भी नहीं आती तो वह केवल अपने प्रियतम् के दर्शन करना चाहती है। जायसी की विरहानी विरह के आग में तपकर पवित्र तथा शुष्क हो जाती है और वह सात्विकता की प्रतिमूर्ती बन जाती है। भोग विलास के प्रति उदासीनता का वर्णन करते हुए जायसी कहते है –

''मेहि भोग सौं काज न बारी,
सौह दीठि की चाहत हारी।''

4.बारहमासे द्वारा विरह वर्णन :–

जायसी ने बारहमासे द्वारा नागमती के ह्रदय का वेदना और मार्मिक पीडा का चित्रण किया है। भारतीय परंपरा के अनुसार आषाढ मास में जायसी का बारहमासा शुरू होता है। इस बारहमासे के अंतर्गत तिज त्यौंहारों के माध्यम से नागमती की वेदना का आधिक्य दिखाया है। एक ओर जिन बालाओं के पति उनके साथ है, वह कुसुमी (लाल) रंग के वस्त्र पहनकर पति के साथ झूले में झूल रही है। तो दूसरी ओर नागमती विरह ....जैसे –

''सखिन रचा पिय संग हिडोला। हरियर भूमि कुसुभी चोला।।
हिय हिडोल जस डोले मोरा। विरह झुलाइ देह झकझोरा।।''

5. विरह में वर्णन कामदशाओं का समावेश :–

कवि जायसी की विरह वर्णन स्वाभाविक तथा मनोविज्ञानिक डंग से चित्रित हुआ है। इसी कारण इनके विरह वर्णन में सभी कामदशाओं का वर्णन देखने को मिलता है। जिसे साहित्यशास्त्र में अभिलाषा, चिंता, स्मृति गुण, कथन, उद्वेग, प्रताप, उन्माद, व्याधी, जडता, आदि नामों क से जाना जाता है। नागमती अपने प्रियतम् के गुणों का स्मरण करते हुए कहती है –

''कंत कहां लागों ओहि हियरें''।

6.विरह वर्णन पर फारसी प्रभाव :–

जायसी का विरह वर्णन फारसी विरह पद्धति से प्रभावित होने के कारण उसमें कहीं कहीं बिबत्स दृश्यों का चित्रण भी हुआ है। ऐसे स्थलों पर पाठकों को रस और भाव की अनुभूति नहीं होती। रक्त, मांस आदि के चित्रण से पाठक के मन में घृणा उत्पन्न होती है। जैसे जायसी के विरह वर्णन में यह घृणा फारसी प्रभाव के कारण आ गई है।

''कुहुकि कुहुकि जस कोयल रोई।
रकत आसु घुंघुची बन बोई''

इसप्रकार 'पद्मावत' के विरह वर्णन में अतिशयता, मार्मिकता, सात्विकता, बारहमाचे द्वारा वर्णन, कामदशाओं का समावेश, फारसी प्रभाव आदि विरह वर्णन का समावेश किया हुआ दिखाई देता है। जिससे विरह वर्णन अधिक प्रभावपुर्ण हुआ है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जायसी के पद्मावत में रानी नागमती की विरह वेदना और राज रत्नसेन और पद्मावती की विरह वेदना को फारसी विरह पद्धती के आधार पर व्यक्त किया है। इस विरह वेदना में अतिशयता के साथ साथ मार्मिकता भी प्रप्त होती है। जायसी ने अपने प्रेममार्ग को सफल बनाने के लिए ही शायद विरह का वर्णन इतना माकि बना दिया है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1.हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधी कवि...................डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
2.हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधी कवि..................डॉ. सुरेश अग्रवाल
3.जायसी ग्रंथावली.......................संपादक–वासुदेवशरण अग्रवाल
4.जायसी ग्रंथावली......................संपादक–रामचंद्र शुक्ल

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.www.oldgrt.lbp.world